भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुक्तेश्वर में "ग्रामीण युवाओं एवं किसानों के लिए उद्यमिता के रूप में मधुमक्खी पालन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

मुक्तेश्वर, 06 अगस्त 2026: भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR-IVRI), मुक्तेश्वर के प्रसार शिक्षा अनुभाग द्वारा संस्थान परिसर में "ग्रामीण युवाओं एवं किसानों के लिए उद्यमिता के रूप में मधुमक्खी पालन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के संयुक्त निदेशक के मार्गदर्शन में डॉ. मनीष तोमर द्वारा किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण युवाओं एवं किसानों को वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन तकनीकों से अवगत कराना तथा उन्हें स्वरोजगार एवं कृषि आधारित उद्यमिता के प्रभावी अवसरों से जोड़ना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में पाँच विभिन्न गांवों से आए ग्रामीण युवाओं एवं किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा प्रशिक्षण से लाभान्वित हुए। प्रतिकूल वर्षा के बावजूद प्रतिभागियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. मनीष तोमर ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्षा के बावजूद किसानों एवं ग्रामीण युवाओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित होना उनके मधुमक्खी पालन के प्रति गहरी रुचि, सीखने की इच्छा तथा उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा अपने बहुमूल्य समय का सदुपयोग करते हुए प्रशिक्षण में भाग लेने की सराहना की।

प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. मनीष तोमर ने "मधुमक्खी पालन का महत्व एवं वैज्ञानिक प्रबंधन" विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक आधार, मधुमक्खी बक्सों (Bee Boxes) के रख-रखाव, मधुमक्खी कॉलोनी के प्रबंधन, कीट एवं रोग नियंत्रण, पूरक आहार (Feeding) की व्यवस्था तथा मधुमक्खियों के समुचित प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण तकनीकी जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन कम लागत में अतिरिक्त आय प्रदान करने वाला एक अत्यंत लाभकारी कृषि आधारित उद्यम है, जिसे ग्रामीण स्तर पर आसानी से अपनाया जा सकता है।

दोपहर के तकनीकी सत्र में डॉ. शेर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यवाहक संयुक्त निदेशक, ने "मधुमक्खी कॉलोनी का माइग्रेशन (Migration) एवं शीतकालीन संरक्षण" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने विभिन्न पुष्पीय क्षेत्रों में मधुमक्खी बक्सों के वैज्ञानिक स्थानांतरण, शहद उत्पादन बढ़ाने की रणनीतियों तथा सर्दियों के मौसम में मधुमक्खी कॉलोनियों की सुरक्षा एवं संरक्षण संबंधी वैज्ञानिक उपायों की विस्तृत जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें ग्रामीण युवाओं एवं किसानों ने मधुमक्खी पालन, कॉलोनी प्रबंधन, शहद उत्पादन, माइग्रेशन, विपणन तथा सरकारी योजनाओं से संबंधित अनेक प्रश्न पूछे। वैज्ञानिकों द्वारा सभी प्रश्नों का विस्तारपूर्वक समाधान किया गया, जिससे प्रतिभागियों को व्यावहारिक एवं तकनीकी जानकारी प्राप्त हुई।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में श्री पवन ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। संस्थान के निदेशक डॉ. राघवेंद्र भट्ट ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए प्रसार शिक्षा अनुभाग की टीम को बधाई दी तथा ग्रामीण युवाओं एवं किसानों के कौशल विकास, स्वरोजगार एवं कृषि आधारित उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अत्यंत उपयोगी बताया।